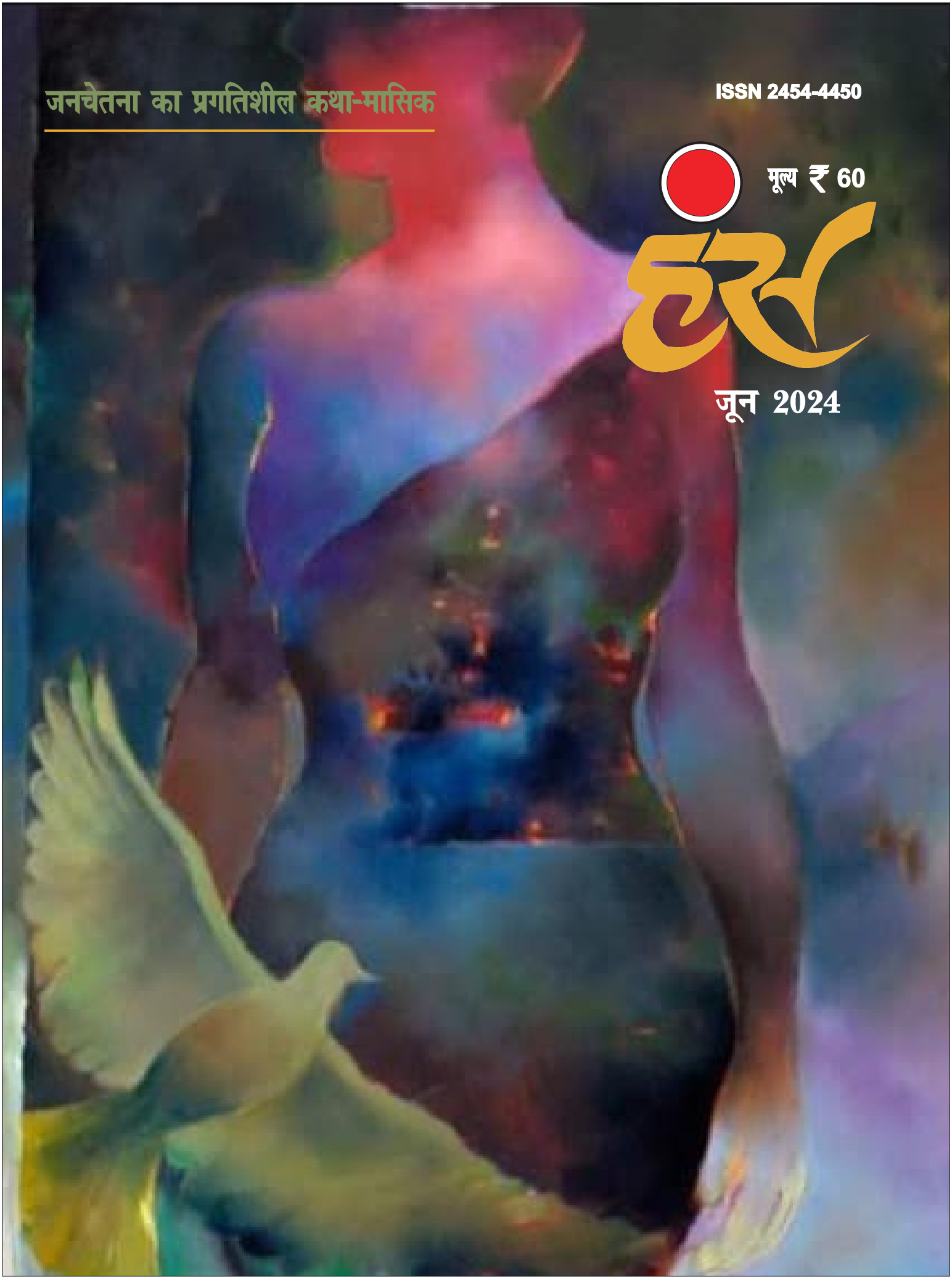

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

जून 2024

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जून, 2024

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-452 वर्ष : 38 अंक : 11 जून 2024

आवरण : रोहित वर्मा

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

अतिथि संपादक : योगिता यादव

इस अंक में

अतिथि संपादकीय
4. खोना और सोना अपने सपनों के साथ : योगिता यादव

अपना मोर्चा
7. पत्र

न हन्यते
11. अलविदा मेरे यार सुरजीत पातर : ख़ालिद हुसैन
14. प्रो. चौथीराम यादव : एक बुलंद प्रतिरोधी स्वर : वीरेंद्र यादव
17. लेखकीय अस्मिता और खुद्दारी की जीवंत मिसाल : सूर्यबाला

कहानियां
20. कहने की जरूरत नहीं : राजेन्द्र दानी
24. खोना भी एक क्रिया है : ज्योत्स्ना मिश्रा
28. पानी के रंग : हंसा दीप
32. निम्फोमेनियाक...? : संध्या तिवारी
37. अपनी मर्जी से कहां : बेजी जैसन
44. हडराइ क्थर जमातिया बनेगा लुकू चकदिरी : रीतामणि वैश्य
54. रिक्त स्थान : विनीता परमार
60. सुरंग के पार रोशनी है : लकी राजीव
66. नई सदी की अभिशप्त आत्माएं : एजाजुल हक

लघुकथा
13. मार्टिन जॉन

कविताएं
72. उदयन वाजपेयी
73. अजय नावरिया
74. देवेन्द्र आर्य

ग़ज़ल
23. कर्नल गौतम राजऋषि
53. कुमार मनोज

आराम नगर
76. वे दास्तानें, जो अधूरी हैं, जो सुनाई न जा सकीं... : फ़िरोज़ ख़ान

आलेख
80. कन्नड़ कथा साहित्य में स्त्री लेखन की जमीन : उषारानी राव

परख
84. महेंदर मिसिर का मिथक–यथार्थ और पुरबी बयार : रामजी सिंह यादव
89. आलोचना की एक अनिवार्य चुनौतीपूर्ण किताब : पंकज शर्मा
92. अप्रतिरोध्य संघर्षशीलता और अदम्य जिजीविषा : अरुण होता
96. सिनेमा और स्त्री की सरहद : नीरा जलक्षत्रि

खोना और सोना अपने सपनों के साथ

योगिता यादव

'स्लीप डिवोर्स' और 'लॉन्ग डिस्टेंस रिलेशनशिप' स्त्री-पुरुष संबंधों की ये दो टर्म बहुत दिनों से मेरे मस्तिष्क में खलबली मचाए हुए हैं. पहली का अर्थ है कि एक ही घर में होते हुए भी आप सोने के लिए दो अलग-अलग जगहों या कमरों का चयन करते हैं. इस टर्म ने कम से कम उन दुखी जोड़ों को कुछ राहत दी होगी जिनके लिए राजेन्द्र यादव जी ने लिखा था, ''होना/सोना एक खूबसूरत दुश्मन के साथ''. भारतीय विवाह पद्धति में बहुत से जोड़े तो घेर-घारकर बस बना दिए जाते हैं. व्यवहार, पसंद और सपनों के स्तर पर दोनों दो ध्रुवों पर होते हैं. उनमें प्रेम भी जरूरत भर का होता है और प्रजनन आयु के समाप्त होते वह चिढ़ में बदलने लगता है. हालांकि घर के पुरुषों का बाहर आंगन में या घर की छतों पर सोना बहुत पुरानी बात है. मगर तब इस तरह की टर्म की जरूरत नहीं पड़ी थी. संभवतः आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर स्त्री ने रिश्ते की इस नई व्यवस्था में योगदान किया हो. एक व्यक्ति की अस्मिता के संदर्भ में यह व्यवस्था अधिक लोकतांत्रिक भी लगती है. संयुक्त परिवार के बाद एकल परिवार और अब उससे भी आगे बढ़कर दो व्यक्तियों के दो अलग-अलग कमरे. कुछ लोगों को यह भारतीय परिवार व्यवस्था पर संकट लग सकता है.

दूसरी टर्म 'लॉन्ग डिस्टेंस रिलशेनशिप' में उन संबंधों को शामिल किया जा रहा है जो अलग घरों, शहरों या अलग देशों में रहते हुए भी एक साथ रिश्ते में हैं. ऐसा रिश्ता जो दूर रहकर भी निभाया जा रहा है. भारतीय हॉकी खिलाड़ी सविता पुनिया हरियाणा की हैं. वे पिछले साल ही शादी के बंधन में बंधी हैं. वे अपने रिश्ते को लॉन्ग डिस्टेंस रिलेशनशिप कहती हैं. उनके सॉफ्टवेयर इंजीनियर पति कनाडा में हैं और वे भारत में रहकर जुलाई में होने वाले पेरिस ओलंपिक की तैयारी कर रही हैं. यानी एक रिश्ते को चलाने और निभाने के लिए दोनों में से किसी पर किसी तरह के त्याग या समर्पण का दबाव नहीं है. मुझे यह दूसरी टर्म और भी ज्यादा लोकतांत्रिक लग रही है.

ये दोनों ही स्थितियां नई नहीं हैं. न ही इनके लाभ और हानियां पहली बार में नजर आने वाले हैं. मगर इन्हें जिस खुलेपन से बताया और स्वीकार किया जा रहा है, उसके मूल में स्त्रियों की आर्थिक और भावनात्मक आत्मनिर्भरता है. वरिष्ठ लेखिका आदरणीया ममता कालिया जी ने एक साक्षात्कार में कहा था कि ''अब प्रेम के लिए कोई नौकरी नहीं छोड़ता''. मेरा मानना है कि भावनात्मक रूप से मजबूत इन लड़कियों को प्रेम के लिए